

# ACHARYA SHREE SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA

12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,  
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

## Book Issue Slip

Member No. : 2142

Mobile Number : 8799682653

Receipt No. : S2799

Member Name : जिनागमविजयजी म.सा.

Total Issued : 203

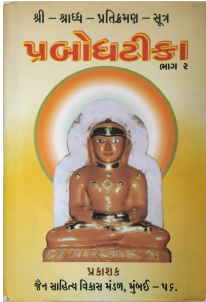
Address : D-501, शुक्रन रेसीडेन्सी, NEAR सौरभ सोसायटी

Issue Date : 05/10/2024

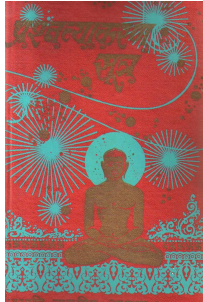
Last Date : 03/01/2025

| Sr No. | Vargank No. | Kruti Name                                                                                                | Notes |
|--------|-------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
| 1      | SA10048     | प्रबोध टीका भाग-1                                                                                         |       |
| 2      | SA10734     | प्रश्न व्याकरण सूत्र (आश्रव अने संवरनु गंभीर विवे.) मूल, संस्कृत छाया, पदार्थ, मूलार्थ, विस्तृत व्याख्या) |       |
| 3      | SA13523     | युगप्रधान जिनदत्तित सूरि                                                                                  |       |
| 4      | SA22553     | बीकानेर जैन लेख संग्रह                                                                                    |       |
| 5      | SA22653     | ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह                                                                                 |       |
| 6      | SA27308     | खरतरगच्छ का इतिहास भाग-1                                                                                  |       |
| 7      | SM00031     | सिरि सिरिवाल कहा                                                                                          |       |

SA10048



SA10734



SA13523



SA22553



SA22653



SA27308



SM00031



SA - पुस्तक विभाग, पाल ज्ञानभंडार, सुरत, SM - प्रत विभाग, पाल ज्ञानभंडार, सुरत

Book Received By

Book Issue By

### संस्थाना नियमो :

- 1) संस्थाना पुस्तको फक्त मेम्बरने ज आपवामां आवशे.
- 2) पुस्तक 90 दिवसमां परत करवानुं रहेशे, कदाच वधारे समय राखवानुं थाय तो 90 दिवस बाद रिन्नु कराववु अनिवार्य छे.
- 3) पुस्तक फाटी के खोवाय जाय तो वाचके संस्था नक्की करे तेदलो दंड भरवानो रहेशे. दंडनी रकम पुस्तकनी छापेली किमत करता वधु होई शके छे.